Proceeding

ISBN-81-904279-6-2

UGC Sponsored One Day Interdisciplinary National Seminar

On

THE CONTRIBUTION & IMPACT OF INDIAN PHILOSOPHERS & SOCIAL REFORMERS

Department Of History

LOKNAYAK BAPUJI ANEY

MAHILA MAHAVIDYALAYA, YAVATMAL

Friday 25 Sept. 2015

U.G.C. Sponsored

One Day National Interdisciplinary Seminar

On

The Contribution And Impact Of Indian Philosophers And Social Reformers.

25 th Sept 2015

★ Organized by ★

Department Of History

Loknayak Bapuji Aney Mahila Mahavidyalaya, Yavatmal

★ Guest Editor ★

Principal Dr. V. N. Bhise

★ Editor ★

Dr. Kavita R. Tated (H.O.D. Associate Prof. History)

★ Member of Editorial Board ★

Dr. Santoshkumar G. Gajale (H.O.D., Asst Prof. Hindi)

Dr. Lata J. Waghela (H.O.D., Associate Prof. Home- Economics)

Dr. Durgesh B. Kunte (Associate Prof. , Director of Physical Education)

Dr. Archana S. Deshpande (Asst. Prof. Music)

Dr. Sudha M. Khadke (H.O.D. Asst. Prof. Sociology)

ISBN No – 81-904279-6-2

Volume- III

Typing, Setting & Printing

Gauri Computers, Yavatmal.

Cover Page Design

Dr. Santoshkumar G. Gajale

★ Published by ★

Principal, L. B. Aney Mahila Mahavidyalaya, Yavatmal – 445 001

The fact, figures and views contained in various papers being published in this book are obviously given by the authors of the paper. The editorial board is not responsible for the statement made or the opinions expressed by the authors.

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	विषय	लेखक/लेखिका	पृ.क्रं.
1)	उद्योजकतातून ग्रामीण विकास : राष्ट्रसंत तुकडोजींचा दृष्टिकोन	प्रा. मोनाली सलामे	1
2)	महाराणा कुम्भा का कला संवर्धन में योगदान	प्रा. कु. वैशाली सरोदे (वाटकर)	3
3)	दादाभाई नौरोजीचा आर्थिक राष्ट्रवाद	प्रा. विजय टोकसे	4
4)	संत तुकारामाच्या अभंगातील भावकाव्य	प्रा. उदयसिंग चव्हाण	6
5)	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे जाती परिवर्तन विषयक विचार	प्रा. बबन सेलकर	7
6)	समाजसुधारक महात्मा गांधी आणि आधुनिक भारत	प्रा.सरिता देशमुख	9
7)	संगीतज्ञों का सामाजिक योगदान	प्रा. अंजू फुलझेले	10
8)	सामाजिक विकासातील जीवन शिक्षणाविषयक संत तुकडोजी महाराजांचा दृष्टीकोन	प्रा. कल्पना गोडे	11
9)	संगीत क्षेत्रातील विचारवंत श्री सत्यशील देशपांडे यांचे समाजासाठीचे सांगितिक योगदान	कु. अपर्णा शेलार	13
10)	लोकमान्य टिळकांचे स्वातंत्र्य आंदोलनातील योगदान	प्रा.अमोल बंड	14
11)	महात्मा जोतीराव फुले यांचे सामाजिक विचार	प्रा. जयश्री सावळे	16
12)	महात्मा ज्योतीराव फुले यांचे शैक्षणिक विचार	प्रा. शुभांगी सावळे	18
13)	स्त्री स्वातंत्र्यात डॉ. आंबेडकरांचे योगदान	डॉ. माधुरी तानुरकर	19
14)	शेतकरी आत्महत्या, गांधी, आंबेडकर व नेहरू	प्रा. संध्य कदम	20
15)	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या आर्थिक विचारांचे विवेचन	डॉ. नितिन कावडकार	22
16)	एक अलौकिक संगीतकार- श्रीनिवास खळे	सौ. गायत्री जोशी	24
17)	डॉ. पंजाबराव उपाख्य भाऊसाहेब देशमुख - कृतिशिल प्रतिभावंत समाजसुधारक	डॉ. श्रीकांत सोनटक्के	25
18)	महात्मा फुले यांचे विचार आणि स्त्रीयांच्या सामाजिक स्थितीतील परिवर्तन	प्रा. वृषाली फुके	26
19)	दादाभाई नौरोजींचे सामाजिक, आर्थिक विचार	प्रा. आर.एम. वाढ	28
20)	भारतीय शिक्षण पद्धती व भारतीय समाजसुधारकांचे शिक्षणविषयक विचार	प्रा. दिनेश काथोटे	29
21)	महात्मा फुलेंची आर्थिक समानता	डॉ. शंकर सावंत	31
22)	वैदर्भीय वाग्गेयकार पं मनोहर कवीश्वर यांनी चरित्रगायनातून केलेली जनजागृती	प्रा. कु. ज्वाला नागले	32
23)	संत नामदेवाचे नाममहात्म्य	प्रा. मोरेश्वर वाकडे	35
24)	स्त्री जीवनाचे शिल्पकार - महर्षी धोंडो केशव कर्वे	प्रा. विजय वाकोडे	37
25)	समाज सुधारक महात्मा ज्योतिबा फुले यांचे सामाजिक परिवर्तनातील योगदान	प्रा. कमलदास राठोड	38
26)	भारतीय स्त्री जीवनातील परिवर्तन आणि समाजसुधारकाचे योगदान	अश्विनकुमार क्षीरसागर	41
27)	विदर्भातील थोर समाजसुधारकांनी किर्तन, भजनाद्वारे केलेली समाज जागृती	प्रा. चंद्रशेखर कुडमेथे	43
28)	संगीत कला संवर्धनात संगीत तज्ञांचे योगदान (स्वातंत्र्यपूर्व ते स्वातंत्र्योत्तर कालखंड)	प्रा. संदीपान जगदाळे	45
29)	भारतीय स्त्री उन्नतीमध्ये समाजसुधारकांचे योगदान	प्रा. जगदीश हेंडवे	46
30)	सामाजिक परिवर्तन व प्रबोधनामध्ये तुकडोजी व गाडगेबाबांचे योगदान	प्रा. किशोर बुटले	47
31)	मराठी कादंबरीतील व्यक्तिरेखांच्या माध्यमातून प्रसृत केलेले विचारवंत लेखकांचे विचारदायी योगदान	प्रा. डॉ. प्रदीप राऊत	50
32)	संतकबीर के साहित्य का समाज जीवन पर प्रभाव	प्रा. डॉ. संतोष येरावार	53
33)	भारतीय स्त्रीयांच्या जीवनातील परिवर्तनात समाजसुधारक महात्मा फुले यांचे योगदान	डॉ. बी. एच. किर्दक	55

ISBN No. 81-904279-6-2

निष्कर्ष- १.मराठी कांदंबरीच्या माध्यमातून विचारवंत असलेल्या मराठी कादंबरीकारांनी त्यातील व्यक्तिरेखांच्या माध्यमातून आपले विविधस्वरूपी जीवनदायी विचार मांडलेले आहेत. २.मराठी कादंबरीतून प्रसृत झालेल्या विविधस्वरूपी जीवनदायी विचारांमधून मानवाला निश्चित असा जीवनमार्ग सापडू शकतो.

संदर्भ-१.पु. य. देशपांडे - आमूलाग्र, नागपूर प्रकाशन, नागपूर. आ. पहिली १९७८ (२)माधव कोंडविलकर - अजून उजाडायचं आहे, मॅजेस्टिक बुक स्टॉल, मुंबई. आ. पहिली १९८१ (३)सुभाष सावरकर - आत्मा, श्रीविद्या प्रकाशन, मुंबई. आ. पहिली १९८२ (४.)अशोक व्हटकर - मेलेलं पाणी, पॉप्युलर प्रकाशन मुंबई, आ. पहिली १९८२ (५) सुमति क्षेत्रमाडे - श्रावणधारा, सन पब्लिकेशन्स, मुंबई. आ. पहिली १९८२ (६) कुमुदिनी रांगणेकर - निर्माल्यातील कळी, सन पब्लिकेशन्स, मुंबई. आ. पहिली १९८३ (७) विलास वरे - साखर सम्राट, सुपर्ण प्रकाशन, पुणे. आ. पहिली १९८४ (८) रवीन्द्र भट - आभाळाचे गाणे, श्रीविद्या प्रकाशन, पुणे. आ. पहिली १९८५ (९) उत्ताम बंडू तुपे - झुलवा, मॅजेस्टिक प्रकाशन, मुंबई. आ. दुसरी १९९२ (१०) पुरूषोत्ताम बोरकर - मेड इन इंडिया, श्रीविद्या प्रकाशन, पुणे. आ. दुसरी १९९५ (११)रामचंद्र जोरवर - उषःकाल, सानिया पब्लिकेशन्स, बेळगाव. आ. दुसरी १९९७ (१२) सुरेश द्वादशीवार - हाकुमी, श्रीविद्या प्रकाशन, पुणे. आ. पहिली १९८९ (१३) रंगनाथ पठारे- ताम्रपट, राजहंस प्रकाशन, पुणे. आ. पहिली १९९१(१४)राजन गवस - तणकट, साकेत प्रकाशन, औरंगाबाद. आ. दुसरी २००२ (१५)त्र्यं. वि. सरदेशमुख - डांगोरा एका नगरीचा, मौज प्रकाशन गृह, मुंबई. आ. पहिली १९९८ (१६) प्रतिमा इंगोले - बुढाई, देशमुख आणि कंपनी, पुणे. आ. पहिली १९९९ (१७)अरूण गद्रे - वधस्तंभ, देशमुख आणि कंपनी, पुणे. आ. पहिली २००० (१८) सदानंद देशमुख - बारोमास, कॉन्टिनेन्टल प्रकाशन, पुणे. आ. दुसरी २००५(१९)डॉ. रा. गो. चवरे - आरंबळ, महाजन पब्लिशिंग हाऊस, पुणे. आ. पहिली २००६

****

संतकबीर के साहित्य का समाज जीवन पर प्रभाव

प्रा.डॉ.संतोष येरावार
देगलूर महाविद्यालय देगलूर

संत कबीर एक समाज सुधारक मानवताधर्म के प्रचारक एवं निर्गुणवादी काव्यधारा के श्रेष्ठ कवि थें सत्य, अहिंसा, विश्वास, प्रेम, दया और समानता का पाठ पढकर अनुभूति मूलक ज्ञान का प्रसार करनेवाले और समाज जीवन को सकारात्मक रुप में प्रभावित करने वाले कवि थें उनकाकाव्य का एक - एक शब्द पाखंडियों के पाखंडवाद, को उघाडने वाला हैं धर्म के नाम पर अपने स्वार्थ की रोटी सेखनेवाले, लोगों को मुर्ख बनाकर उन्हे लुटनेवाले, अंधश्रध्दा और बाह्यअडंबर को बढावा देने वाले धर्म के दुकानदारों को ललकारता घदेडता और सुधारता हैं अन्याय, असत्य, ढोग, विकृतियो, पाखंड, अत्याचार एवं अमानवीयता की धज्जियाँ उडाना तथा समाज में बंधुता, और शुध्द धार्मिक आचरण स्थापित करना उनके साहित्य का लक्ष्य थां कबीर का समाज सुधार भाव समाज व्यवस्था में व्याप्त विकृतियों विडंबनांओ तथा विषमतांओं को उघाडता भी हैं और व्यवस्था को सुधारता भी हैं संत कबीर का साहित्य मानवता एवं समाज परिवर्तन की पाठशाला हैं संत कबीर के समय में समाज में चारों और धार्मिक पाखंड, जात - पात छुआछुत, सांप्रदाईकता, अंधश्रध्दा से भरे कर्मकांड, मुल्ला, मौलवी तथा पंडीत - पुरोहितो का ढोंग और सांप्रदायिक उन्माद चरम पर थां समाज धर्म के नाम पर दिग्भ्रमित थां धर्म के स्वच्छ और निर्मल आकाश में ढोंग - पाखंड, हिंसा तथा अधर्म व अन्याय के बादल छाए हुए थें उसी समय कबीर के साहित्य नें समाज को नई दिशा देने का कार्य अपने साहित्य के माध्यम से कियां संपुर्ण समाज व्यवस्था कों लेखनी से प्रभावित करने का अतुलनीय कार्य कबीर के काव्य ने किया हैं

आज समाज के जिस युग में हम जी रहे हैं, वहाँ जातिवाद की विषैली राजनीति, धार्मिक पाखंड का महाजाल, सांप्रदायिकता की आग में झुलसता जनमानस, आतंकवाद का नग्न तांडव, समाज में व्याप्त हिंसा, शोषण, विलासिता, नैतिक, पतन, चरित्र हिनता, छुआछुत, रुढि - परंपराओं का बंधन, तीर्थाटन, तथा तंत्र - मंत्र के मिथ्या भ्रम - जाल से समाज और राष्ट्र आज भी उभर नही पाया हैं कबीर का साहित्य एक आशा की किरण हैं परिवर्तन की सकारात्मक बयार लानेवाला उनका साहित्य हैं कबीर का साहित्य समाज को शोषणमुक्त एवं लोगों को मानवीयता से लबालब करने में, उन्हे नीति और सत्य के मार्ग पर लाने में सहाय्यक साबित हो सकता हैं कबीर का साहित्य सामान्य जनमानस और उनकी समस्याओंको उघाडने वाला हैं जो समाज व्यवस्था को गहराईसे प्रभावित करता हैं समाज को सही दिशा देना, उन्हें आडंबरों के विरोध में सजग करना, नीति एवं आचरण की शुध्दता स्थापित करनें में मार्ग - दर्शन करना, असत्य के राह से निकालकर जनमानस को सत्य के पथ पर चलनें में सहायत्ता करनें में कबीर का साहित्य एक मिल का पत्थर साबित हो सकता हैं कबीर का साहित्य हमारे वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन के लिए अत्यंत प्रासंगिक एवं समीचीन लगता हैं कबीर हिन्दू और मुस्लिम के साथ - साथ ब्रम्हांड के सभी लोगों को एक ही धरती पर प्रेमपूर्वक आदमी की तरह रहने की हिदायत देते हैं

वो ही मोहम्मद, वो ही महादेव, ब्रम्हाड आदम, कहिर, को हिन्दू, को तुरुक कहाए, एकजिमि पर रहिए

कबीर - सीधे - सहज ढंग से सामाजिक विसंगतियों, अन्तर्विरोधों पर चोट करते हैं मनुष्य को मनुष्य के रुप में प्रतिष्ठा देने का संकल्प कबीर में थां वे सब - प्राणीयों को एक मानकर वे समत्व वादी दृष्टि के हिमायती थे, जो मानव मात्र से प्रेम करना सिखाते हैं इनके रचना का केन्द्र मानव हैं कबीर ने मनुष्य को मनुष्य के रुप में देखते हुए जाति, वर्ग, सम्प्रदाय के उपर हो समाज दृष्टिसे देखा है जिस कारण उनका सामाजिक जीवन पर प्रभाव परिलक्षित होता हैं

जॉति - पॉति पुछे - नही कोई, हरि को भजै सो हरि का होई

ISBN No. 81-904279-6-2

कबीर ने बाह्य आडंबर, पुजा - पाठ जप, तीर्थ, गंगास्नान, मुर्तीपुजा आदि का जमकर विरोध किया कबीर ने ब्राम्हणों की तथाकथित उच्चता और जनविरोधी , समाजविरोधी, न्यायविरोधी, मानसिकता पर करारा व्यंग्य कसा हैं कर्मकांड को बढावा देने वाली मानसिकता को उघाडा हैं छुआछुत को बढावा देने का कार्य वर्ण व्यवस्था ने किया हैं बल्की सभी की धमनियों मे एक ही रक्त प्रवाहित हो रहा हैं सभी हाडमांस के बने हुए हैं वह ब्राम्हण हो या शुद्र

बेद कतेब दीन अरु दुनिया, कौन पुरिष कौन नारीं एक बूंद एकै मल मूतर, एक याम एक गूदा

एक जोति थे सब उतपनां, कौन ब्राम्हण कौन सूदा संत कबीर का समाज - दर्शन एक ऐसा उन्मुख दोषरहित आदर्श समाज की मान्यता को स्वीकार करता है, जहाँ - ऊँच - नीच , जाति - पाँति , छुआछूत अस्पृश्यता आदि का कही स्थान न हो व्यक्ति बिना किसी प्रकार के भेदभाव के उन्मुक्त दोषरहित जीवन जी सके उनकी सामाजिक कुरीतियों सामाजिक विकृतियों, पाखंड और ढोंग को समाप्त करने संबंधी सुक्तियाँ सर्वांगीण समाज के विकास और नवनिर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं कबीर को जन्म के आधार पर जाति का विभाजन एवं सामाजिक प्रतिष्ठा का वितरण असहनीय हैं वर्ण और जाति का भेदभाव समाज की अन्यायपूर्ण हालत हैं धर्म के नाम पर अपना व्यवसाय स्थापित करना और समाज में जातिय विषमता निर्माण करना समाज के लिए अत्यंत घातक हैं कबीर नें अपने रचना के द्वारा धार्मिक पाखंड को उघाडा हैं जिसका प्रभाव सामाजिक जीवन पर परिलक्षित होता हैं कबीर हिन्दू एवं मुस्लिम धर्म में व्याप्त धार्मिक पाखंड को उजागर कर मानवीय धर्म की स्थापना करना चाहते हैं जिसमें न कोई हिन्दु, न मुसलमान, न ब्राम्हण, न शुद्र सभी मानव हैं यह तभी संभव है जब विभिन्न धर्मो में व्याप्त विक्रृतियों को उघडा जाए और जनमानस को सोचने के लिए मजबूर किया जाए और कबीर ने ए दोनो कार्य भलीभाँती किए हैं कबीर मुस्लिम धर्म में व्याप्त पाखण्ड को उजागर करते हुए कहते है की, सुन्नत करा लेने से अगर मनुष्य मुसलमान हो जाता तो औरत की क्यों नही सुन्नत करायी जाती है ? सुन्नत के बिना वह तो हिन्दू ही रह जाती है

जो खुदाय तेरी सुनति करतु है, तो आपुहि काटि क्यो ना आई ? सुनति कराय तुरक जो होना, औरत को का कहिये अर्ध सरीरि नारि बखानी, तातै हिन्दू रहिये संत कबीर के अनुसार जाति - पाँति, धर्म - संप्रदाय, ऊँच - नीच, काला - गोरा का भेद निरर्थक हैं यह भेद भाव ही समाज को बॉटने का और परस्पर संघर्ष निर्माण करने का कार्य करते हैं इसलीए मनुष्य को मानवता धर्म का आचरण करना चाहिए जो समाज को बॉटता नही तो जोडता है

नही को ऊँचा नहीं को नीचा, जाका प्यंड ताही का सींचा

मनुष्य का मुल्यांकन यह कर्म और गुणों के आधारपर होना चाहिए केवल श्रेष्ठ कूल में जन्म लेने से मनुष्य श्रेष्ठ नहीं होता हैं मनुष्य का कर्म मनुष्य को श्रेष्ठ बनाते हैं अपने साहित्य के द्वारा समातामूलक विचारों से समाज को विवेकशील बनाने का प्रयास कबीर करते हैं वे एक वर्गविहीन समाज बनाना चाहते थे , जिसमें ब्राम्हण और शूद्र, हिन्दु और मुसलमान में कोई जातिगत भेद एवं धर्मगत भेद न हो कबीर का मानना था कि, समाज मे ऊँच - नीच का भेद मिथ्या है क्यों कि, संपुर्ण जगत की उत्पत्ति पवन, जल, अग्नि, मिट्टी और आकाश आदि पंचभूतो से हुई हैं सभी में एक ही ज्योति समान रुप से व्याप्त है लेकिन केवल भौतिक शरीर कें द्वारा नामरुप का भेद हैं

ऊँच - नीच है मधिम बानी, एकै पवन, एकै पानी पानीं एकै माटिया एक कुंभारा, एक समान्हि का सिरजन हारा

संत कबीर ने सामाजिक अंधविश्वास, धार्मिक अंधविश्वास, बाह्याडम्बर , को उघाडते हुए सामान्य जनमानस को सामाजिक - धार्मिक परिस्थिति में व्याप्त पाखंड और कुरितियों के प्रति सजग और सचेत किया कबीर की लेखनी सें कोई भी विवेकशील समाज प्रभावित ना हो ऐसा हो ही नही सकता हैं कबीर नें ऐसे प्रश्न खडे किए है, जो मनुष्य को सोचने के लिए बाध्य करते हैं और समाज व्यवस्था को प्रभावित करते हैं धार्मिक अंधविश्वास ने मानव जाति को गहरे अंधकार में ढकेल दिया हैं जिससे मनुष्य और समाज विकास की दिशा में अग्रेसर होने के बजाय पतन की ओर अग्रेसर हो रहा हैं धार्मिक अंधविश्वास ने मनुष्य की सोच को बौना बनाया हैं काशी में मृत्यु से स्वगं प्राप्ती, मंत्र एवं जाप विधान, मुर्तीपुजा, तीर्थाटन, अवतारवाद, बहुदेव उपासना, उपवास, केसमुंडन, तिलक माला रोजा, नमाज, जकात, हजयात्रा, जनेऊ धारण करना, पशुहत्या, नामस्मरण, एवं छुआछुत जैसे धार्मिक एवं सामाजिक पाखंड पर करारा प्रहार किया और जनमानस को सोचने के लिए बाध्य किया जैसे...

जीवित पितर न मानै कोऊ, मुए सराध्द कराही पितर भी बपुरे कहु क्यो पावहिं, कौवा कूकट खाहीं

तंत्र मंत्र से हम सबको वह शाश्वत सुख और शान्ति कहाँ मिलती है ? इसी को मिथ्या बताते हुए संत कबीर कहते है -

तंत्र - मंत्र सब झुठ है, मत भरमो संसार, सार सबद जाने बिना, कोई न उतरे पार

संत कबीर ने लोगों की ऑखे खोलने का कार्य धार्मिक पाखंड को उघाडकर किया हैं संत कबीर ने सामाजिक - धार्मिक कुरुतियों को उघाडने के साथ - साथ हिन्दू - मुस्लिम एकता का प्रयास किया हैं संत कबीर की मनुष्यता में अटूट आस्था थीं जिस कारन समाज में व्याप्त धार्मिक मतभेद एवं टकराव के बीच नयी राह बनाने का साहस एवं विवेक कबीर कि लेखनी में परिलक्षित होता हैं संत कबीर का मानना है कि, कहने के लिए कोई हिन्दू है तो कोई मुसलमान है, लेकिन य दोनो रहते तो एक ही धरती पर हैं राम और रहीम एकही ईश्वर के अलग - अलग नाम हैं उन्होने हिंदू - मुसलमानों को फटकार मात्र नही लगाई अपितु उनके बीच समन्वय स्थापित करने का प्रयास भी किया मै न हिन्दू हूँ न मुसलमान, न मै पुजा - पाठ करता हुँ, न नमाज पढता हूँ मै तो बस निराकार ईश्वर को नमन करता हूँ न मै हज करता हूँ न तीर्थ जैसे

पुजा करुँ ना निमाज गुजारुँ, एक निराकार -हृदय नमस्कारुँ, न हजर जाऊँ न तीरथ पूजा, एक पिछाण्यां तो क्या दुजा

संत कबीर का मत है कि, हिन्दू मुसलमानों को बाह्याडम्बर से समाज में भेद - विभेद ही फैलता है, जिससे मानव अमानुष कार्य करता है परिणाम स्वरुप समाज अवनति की ओर जाता हैं हिन्दु - मुसलमानों के परस्पर संघर्ष को मिटाकर समन्वय लाने का प्रयास कबीर ने

किया है' कबीर ने हिन्दू - मुसलमानो के मध्य निर्माण वैमनस्य की खाई को कम करने का प्रयास किया है' हिन्दू और मुसलमानों के बीच सामाजिक और धार्मिक एकता का भाव जगाया' जातिभेद, वर्णभेद तथा धर्म भेद संघर्ष के कारण है' मनुष्य को इसे छोड प्रगतिमय पथ अपनाने का सुझाव दिया.

कहे कबीरा, दारु फकीरा, अपनी राह चलि भाई' हिन्दू - तुरक का करता एकै, ता गति लखी न जाई'

कबीर का कथन है कि, राम - रहीम, केशव - करीम सभी एक ही सत्य के दो रुप हैं' मुसलमानें की मस्जिद और हिन्दुओं का मंदिर दोनो में एक ही खुदा - राम का निवास है' परंतु जहाँ मंदिर और मस्जिद नही है वहाँ कौन रहता है ? वास्तव में वहाँ भी परमात्मा काही निवास है ' कबीर कहते है कि, हे साधुओ अपनी - अपनी राह चलो, हिन्दु और मुसलमान का कर्ता एक ही है और उसके रहस्य को जानना कठिन है' हिन्दु और मुसलमानो के बीच सामाजिक कुरीतियों और सत्य पर आवरण डालने वाली धार्मिक मान्यताओं का कबीर ने विरोध किया है' अतः कहा जा सकता है कि, संत कबीर का साहित्य जनमानस के अंतरमन झनझोरने वाला, उन्हे परिवर्तनशील बनाने वाला साहित्य है' कबीर के साहित्य का केंद्र बिदु मनुष्य है' उन्होने मानव - मानव के बीच में जो दीवारें खडी हो रही थी, उसे धराशायी करने के लिए निर्भिकतासे प्रयत्न किया है' उनकी वाणी मानवतावादी जीवन - मुल्यों की जडें मजबूत करती है, जिससे मनुष्य के मन का और तदस्वरुप समाज का परिवर्तन हो जाता है' संत कबीर ने नीति , शोषण एवं अत्याचार पर आधारित व्यवस्था का विद्रोह करके वैचारिक स्वतंत्रता का समर्थन किया है' कबीर के राह पर चलकर ही समाज में शांती एवं समता स्थापित हो सकती है' संत कबीर नें जाति, वर्ण एवं संप्रदायो की सीमाओं का अतिक्रमण कर एक ऐसे मानव धर्म और मानव समाज की स्थापना की जिसमें विभिन्न दृष्टिकोण रखने वाले व्यक्ति भी निःसंकोच होकर सम्मिलित हुए' जीवन की स्वाभाविक व सात्विक क्रियाशीलता में ही उनके धर्म की व्यवस्था है' उन्होंने मानव मात्र के लिए प्रेम के समान धरातल पर रहने का सर्वमान्य सिध्दांत प्रतिपादित किया सारा विश्व को समान बनाने का प्रयास उनके साहित्य में है' कबीर आज भी दहकते अंगारे है' कानन - कुसूम भी है कबीर जीनकी भीनी - भीनी गंध और सुवास नैसर्गिक रुप से मानवीय अरण्य को सुवासित कर रही है' कबीर भारतीय मनीषा के भूगर्भ के फौलाद है जिसके चोट से ढोग, पाखंड, आडंम्बर और धर्मांधता चुर - चूर हो जाती है' मानवता धर्म का प्रचार - प्रसार करने में विश्वास रखनेवाले कबीर एक अजरामर रचनाकार है' जीवन के श्वाश्वत सत्य को उदघाटित करने वाले संत कबीर है' समाज जीवन को सकारात्मक एवं निर्माणात्मक रुप से प्रभावित करने वाले संत कबीर नये समाज के निर्माण की ललक रखते है जनता में आत्मबल और आत्मविश्वास पैदा किया और साधन मार्ग पर चलने का संदेश देने वाला साहित्य है' कबीर की लेखनी से कोई भी विवेकशील समाज प्रभावित ना हो ऐसा हो ही नही सकता है' कबीर नें ऐसे प्रश्न खडे किए है, जो मनुष्य को सोचने के लिए बाध्य करते है' और समाज व्यवस्था को प्रभावित करते है'

साहित्य निश्चित रुप से सामान्य जनमानस और समाज व्यवस्था को सकारात्मक रुप में प्रभावित करता है' साहित्य में तत्कालीन परिस्थिती मे. व्याप्त समस्योओका मानसिकता का, विकृतियो का, विडंबनाओ का विषमताओंका तथा आचार-विचारों का उद्घाटन होता है,' कबीर के साहित्य में भी तत्कालीन परिस्थिती परिलक्षित होती है' कबीर जैसे संत ही निर्भिक, बेबाक रचनाकार तो समाज को गहराईसे प्रभावित करते है'

संदर्भ : १.सं.डॉ.श्यामसूंदर दास - कबीर ग्रंथावली. २. कबीर बीजक, सबद - ३.आ.हजारीप्रसाद द्विवेदी - कबीर ४.डॉ.ज्ञानेश्वर गंगाधरराव गाडे - संत कबीर और तुकाराम के काव्य में प्रासंगिकता ५. सं.पारसनाथ तिवारी - कबीर ग्रंथावली ६.डॉ.एल.बी.राम. अनंत, कबीर ग्रंथावली (सटीक) ७.डॉ.पुष्पपाल सिंह - कबीर ग्रंथावली (सटीक)

****

भारतीय स्त्रीयांच्या जीवनातील परिवर्तनात समाजसुधारक महात्मा फुले यांचे योगदान

डॉ.बी.एच. किर्दक सहयोगी प्राध्यापक,
श्री सं.ग.म.महा, बोरगाव मंजू, ता.जि.अकोला

भारतात १९१८ साली मराठेशाहीचा पराभव करून ब्रिटीशांनी आपली राजवट लागू केली. भारत पारतंत्र्यात पडला. भारताची विशेषत: आर्थिक हानी मोठ्या प्रमाणात झाली. पण तरीही वाईटातून चांगले झाले ते ही की ब्रिटीशांच्या प्रभावामुळे भारताच्या आधुनिक इतिहासाचे पान उघडले गेले. त्यांचे शिक्षण, त्यांचा समाज, त्यांची प्रगती इत्यादीमुळे प्रभावित झालेल्या भारतीय समाजसुधारकांनी भारतीय समाजव्यवस्थेत मौलीक योगदान केले आहे. त्याचा आढावा घेण्याआधी ब्रिटिशांचा अंमल होण्याच्या वेळचा भारतीय समाज कसा होता हे पाहणे महत्त्वाचे आहे.

इंग्रजांची राजवट स्थापन होण्यावेळचा भारतीय समाज

भारतात इंग्रजांची राजवट स्थापन होण्यापूर्वी भारतीय समाजात अनेक अनिष्ट चालीरिती, प्रथा-परंपरा, अंधश्रध्दा, वेडागळ समजूती यांचेच उदंड पीक आले होते. समाजात चातुर्वण्य व्यवस्थेला मान्यता मिळून ब्राह्मणांचे सामाजिक स्तरीकरणातील श्रेष्ठत्व सर्वांना विनबोंभाट सहन करावे लागत होते. तर कथाकथित अस्पृश्यांना अत्यंत अमानुष वागूणक मिळत होती. सर्वांत महत्त्वाचे म्हणजे धर्माच्या नावाने ही पराकोटीची सामाजिक विषमता जोपासली जात होती. या जातिसंस्थेने भारतीय समाजात अनेक तुकडे पडले होते. धर्मातदेखील अनेक गैरप्रकार वाढले होते. हिंदू धर्म व त्यांचे मानवतावादी विचार याचा विसर पडला होता. वेदोक्त, पुराणोक्त, मूर्तिपूजा, व्रतवैकल्ये, जपजाप्य, अनुष्ठाने इ. कर्मकांडाचे स्तोम माजले होते. अनेक वेडगळ समजूती, अंधश्रध्दा, चालीरितीचे धर्माच्या नावाखाली समर्थन केले जात होते. नैतिकता, सदाचार यापासून लोकांनी धर्माची फारकत केली होती. सतीची चालदेखील धार्मिक प्रथा बनली होती.